

वसूनि वाञ्छन्न वशी न मन्युना स्वधर्म इत्येव निवृत्तकारणः।

गुरूपदिष्टेन रिपौ सुतेऽपि वा निहन्ति दण्डेन स धर्मविप्लवम् ॥ १३ ॥

अन्वय-

वशी सः वसूनि वाञ्छन् न, मन्युना न, (किन्तु) निवृत्तकारणः (सन्) स्वधर्मः इत्येव गुरूपदिष्टेन दण्डेन रिपौ सुते अपि वा धर्मविप्लवम् निहन्ति ॥ १३ ॥

अर्थ –

इन्द्रियों को वश में रखनेवाला वह दुर्योधन न तो धन के लोभ से और न क्रोध से (ही किसी को दण्ड देता है) अपितु लोभादि कारणों से रहित होकर, इसे अपना (राजा का) धर्म समझ कर ही वह अपने गुरु द्वारा उपदिष्ट (शास्त्रसम्मत) दण्ड का प्रयोग करके शत्रु हो या अपना निज का पुत्र हो अधर्म का उपशमन करता है ॥ १३ ॥

टिप्पणी-

तात्पर्य यह है कि वह दण्ड देने में भी पक्षपात नहीं करता। न तो किसी को धन-सम्पत्ति या राज्य पाने के लोभ से दण्ड देता है और न किसी को क्रोधित होने पर, बल्कि दण्ड देने में वह अपना एक धर्म समझता है। शास्त्रों के अनुसार जिसको जिस किसी अपराध का दण्ड उचित है वही वह देगा। दण्डनीय चाहे कोई शत्रु हो या अपना ही पुत्र क्यों न हो। दुष्ट ही उसके शत्रु हैं और शिष्ट ही उसके मित्र हैं।

यहाँ पदार्थहेतुक काव्यलिंग अलंकार है।

विधाय रक्षान्परितः परेतरान्शङ्कितकारमुपैति शङ्कितः।

क्रियापवर्गेष्वनुजीविसात्कृताः कृतज्ञतामस्य वदन्ति सम्पदः ॥१४॥

अन्वयः—

(सः) शङ्कितः (सन्) परितः परेतरान् रक्षान् विधाय, अशङ्कितकारम् उपैति । क्रियापवर्गेषु अनुजीविसात्कृताः सम्पदः अस्य कृतज्ञतां वदन्ति ॥ १४ ॥

अर्थ-

सर्वदा सशंक चित्त रहने वाला वह दुर्योधन सर्वत्र चारों ओर अपने आत्मीय जनों को रक्षक नियुक्त करके अपने को सबका विश्वास करने वाला प्रदर्शित करता है । कार्यों की सफल समाप्ति पर राज सेवकों को पुरस्कार में प्रदान की गयी धन-सम्पत्ति उसकी कृतज्ञता की सूचना देती है ॥१४॥

टिप्पणी-

तात्पर्य यह है कि यद्यपि दुर्योधन ने राज्य के सभी उच्च पदों पर अपने आत्मीय जनों को नियुक्त पर रखा है तथापि वह सर्वदा सशंक रहता है और प्रकट में ऐसा व्यवहार करता है कि मानों सब का विश्वास करता है। किसी भी कर्मचारी को वह यह ध्यान नहीं आने देता कि वह राजा का विश्वासपात्र नहीं है । यही नहीं, जब कभी उसका कोई कार्य सफल समाप्त होता है तब वह उसमें लगे हुए कर्मचारियों को प्रचुर धन सम्पत्ति पुरस्कार रूप में देता है। वही धन-सम्पत्तियाँ ही उसकी कृतज्ञता का सुन्दर विज्ञापन करती हैं । इस प्रकार के कृतज्ञ एवं उपकारी राजा में सेवकों की सच्ची भक्ति का होना स्वाभाविक ही है । यहाँ पदार्थहेतुक काव्यलिङ्ग अलङ्कार है ।